IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वच्छ पर्यावरण हेतु वृक्षों का महत्व

डॉ0 सुकृति
अतिथि सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग,
एम0आर0एम0 कॉलेज, दरभंगा।

पर्यावरणीय संरक्षण एवं परिवर्द्धन का विचार भारतीय जीवन दर्शन में स्पष्टः परिलक्षित होता है। यहाँ आरंभिक काल से दिन का प्रारंभ सूर्य नमस्कार एवं तुलसी में जल डालकर करने की रीति रिवाज रही है। पूजन पद्धति में पीपल एवं वट वृक्ष से लेकर नीम, आँवला एवं केला तक जैसे पेड़–पौधों की महत्ता का प्राचीन काल से स्थापित होना न तो अचानक है और न ही बिना किसी निरुदेश्य के। चौबीसों घंटा ऑक्सीजन का उत्सर्जन करने वाले पीपल का वृक्ष की रक्षा करने हेतु उसमें देवताओं के वास करने की बात कही गई है। प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से सृष्टि का उत्पन्न होना एवं प्रकृति में देवत्व के दर्शन करने का हमारा दर्शन इसी बात की ओर इंगित करता है कि जिनसे हमारा जीवन संभव है। उन पेड़–पौधों, नदियों, पर्वतों अर्थात, संपूर्ण पर्यावरण में ही देवता का वास है। इनको पूजने का अर्थ है कि इन्हें समुचित सम्मान दें।

पर्यावरण संरक्षण एक पुरानी सोच है। भारतीय चिंतन परंपरा में प्रारंभिक साहित्यों एवं दर्षनों में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वेद विष्व साहित्य के वे प्रामाणिक एवं प्राचीनतम ग्रंथ हैं जिनमें पर्यावरण संरक्षण की चेतना मौजूद है। चारों वेदों में मनुष्य एवं प्रकृति के बीच घनिष्ठ संबंध को बताया गया है। अथर्ववेद में प्रकृति एवं मनुष्य में माता–पुत्र का संबंध बताया गया है। इस संबंध में प्रकृति के प्रति निष्ठा की भावना जागृत होता है जिसमें प्रकृति भोग की वस्तु न होकर जीवनदायिनी सिद्ध होती है। वैदिक मान्यता है कि प्रकृति एवं मनुष्य दोनों के विकास हेतु यह जरूरी है कि संपूर्ण ब्रह्मांड को सुरक्षित रखा जाये। इसके लिए अथर्ववेद में परिधि को आधार माना गया है।[1] परिधि का दूसरा नाम छन्दस् भी हैं। ये भौतिक तत्वों को घेरे हुए होती है। ये भौतिक तत्व हैं अप् (जल), वात (हवा), और औषधि (वृक्ष इत्यादि)। ये ऐसे तत्व हैं जो हमारे जीवन को संरक्षण एवं शक्ति प्रदान करते हैं।

प्रकृति को संतुलित करने के लिए मनुष्य द्वारा कोई हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रकृति स्वयं ही सृष्टि को संतुलित करती है। जल, पेड़–पौधे, अंतरिक्ष, वन, वृक्ष से भरे हुए पर्वत द्वारा प्रदूषण की जाँच अपने आप कर ली जाती है। इस बात का उल्लेख ऋग्वेद में पाया जाता है।

आप ओषधीरूप नोऽवस्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशः।[1]

साथ ही प्रकृति के पास इन प्रदूषणों को नाष करने का तरीका भी उपलब्ध है। ऋग्वेद में इस बात की चर्चा की गई है कि 'सूर्य अंतरिक्ष के प्रदूषण को, वायु मध्यक्षेत्र में होने वाले प्रदूषण को एवं अग्नि पृथ्वी पर होने वाले प्रदूषण को नष्ट कर देती है।

प्राचीन काल में वृक्षों को हम सहानुभूति, प्रेम, आदर की दृष्टि से देखते थे। वृक्षों में चेतना को स्वीकार किया जाता है, सुख–दुःख के अनुभव की शक्ति में विश्वास करते हैं। मनुस्मृति में एक–दो स्थानों पर कहा गया है कि वृक्षों की योनि पूर्व जन्म के कारण मानी गई है एवं इन्हें जीवित एवं दुःख सुख का अनुभव करने वाला माना गया है।

वैदिक ऋचाओं में वृक्षों को माता कहकर पुकारा गया है। उन्हें उखाड़ने के पूर्व प्रार्थना की गई है कि हे वनस्पति तुम्हें उखाड़नेवाला नष्ट न हो, जिसके लिए उखाड़ा गया वह भी नष्ट न हो, तुम कल्याण करनेवाली हो।

इसके अतिरिक्त धार्मिक ग्रंथो में भी वनस्पतियों को बहुत महत्व दिया गया हैं। यहाँ जीवन के सोलह संस्कारों गर्भधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक उन्ही वनस्पतियों का उपयोग होता है। घर में कोई मंगल कार्य होता है तब सर्वप्रथम शांति पाठ किया जाता है जिसमें अंतरिक्ष, पृथ्वी की शांति के साथ औषधि एवं वृक्षों की शांति के लिए प्रार्थना की जाती हैं।

वृक्ष मानवमात्र के सेवक हैं। हरेक कदम पर सहायक और मनुष्य जीवन को ऊँचा उठाने वाले हैं। औषधि स्वरुप तो उनके कर्ज से मानव, जीव–जन्तु कोई भी कर्जमुक्त नहीं हो सकता। खाद्य–पदार्थ, काष्ठ, बहुमूल्य रासायनिक तत्त्वें सभी का लाभ हमें पेड़ों से ही मिलता हैं। इसलिए हमारे यहाँ हरे–भरे वृक्षों की कटाई करने पर पाप लगने का भय माना गया है। हिन्दुओं के आचार–विचार वैज्ञानिक तत्त्वों से भरपूर हैं। विशेषतः वृक्ष पूजन तो सूक्ष्म अनुसंधान का द्योतक है।

वैदिक काल में वन अधिक थे एवं पर्याप्त वर्षा होती थी। झरनों एवं नदियों का शुद्ध जल मनुष्य ग्रहण करता था। अनेकों वनस्पतियाँ एवं औषधियाँ जल के साथ बहकर जल के गुणों को और बढ़ा देती थी। किन्तु वर्तमान समय में झरनों, तालाबों एवं नदियों में औद्योगिक क्षेत्रो के अपशिष्ट तत्व, मल–मूत्र बहते हैं। जब जलचर इस विषैले जल को ग्रहण करते हैं, तो अकस्मात मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। फलस्वरूप जल में रहनेवाले जीवों में लगातार ह्रास हो रहा है। मछलियाँ एव अन्य जीव जन्तु स्वयं पानी में उपलब्ध गंदगी को

ख़ाकर जल को शुद्ध करने का काम करते हैं किन्तु जिस तरह से जल विषाक्त होते जा रहा है उससे उन जीवों के ऊपर संकट के बादल छाये हुए हैं और इन जीवों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा तो शुद्ध जल की उपलब्धता कैसे प्राप्त होगी, यह एक सोच का विषय है।

हमारे धर्म और संस्कृति में जो स्थान विद्या–व्रत, ब्रह्मचर्य, बाह्मणत्व, गऊ, देव मंदिर, गंगा, गायत्री एवं गीता–रामायण आदि धर्म ग्रंथ को दिया गया है, वैसा ही वृक्षों को भी महत्व दिया गया है। यह महत्त्व उन्हें उनके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों को देखते हुए दिया गया है। वृक्ष में देवत्व की प्रतिष्ठा स्वीकार करते हुए गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है–

हे धनंजय! संपूर्ण वृक्षों में पीपल वृक्ष हूँ, देव ऋषियों में नारद गंधर्वो में चित्ररथ तथा सिद्धों में कपिलमुनि मैं ही हूँ।

जहाँ भगवान् कृष्ण ने स्वयं को पीपल वृक्ष में समासीन किया है, वहाँ उनके कथन से यह भी सिद्ध हो जाता है कि वृक्ष देवऋषियों, सिद्धों और गंधर्वों के समकक्ष प्रतिष्ठित

होते है देवत्व के समाज में इनकी श्रेणी छोटी नहीं है। संसार में यदि कल्याणकारी, परोपकारी, समदर्शी फलदायी और वरदायी व्यक्तियों में देवों या गंधर्वों को प्रतिष्ठा दी जाए तो वृक्ष भी उनसे कम सम्मान के पात्र नहीं हैं।

संभवतः इन्ही बातों पर पूर्ण रूप से विचार करने के पश्चात् भारतीय आचार्यों, ने वृक्षारोपण और वृक्ष की प्रतिष्ठा को महान पुण्य स्वीकारा है और उनसे अनेक प्रकार के वरदान मिलने की बात कही है। धर्म ग्रंथों में ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं।

ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है–

जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पक्षियों की ग्रीवा मरोड़ कर उन्हें कष्ट पहुँचाता है और मौत के घाट उतार देता है, तुम वैसे मत बनो और इन वृक्षों को कष्ट न पहुँचाओ, इनका उच्छेदन न करो, ये पशु–पक्षियों एवं समस्त प्राणियों के लिए शरणागतवत्सल्य हैं। धरती माता को शस्य–श्यामला कह कर उसकी बंदना की गयी है। यह पुण्य नाम उसे इसलिए दिया गया था कि वह पेड़–पौधों, लता–गुल्मो से सदा आच्छादित रहा करती थी। ऊँचाई से इसका पिण्ड सर्वथा हरा भरा दृष्टिगोचर होता है।

प्राचीन काल में विद्यालय वैसे जगह पर होते थे जहाँ आस–पास हरियाली होती थी। छात्रों को वृक्षावली बढ़ाने के लिए सदैव प्रेरित किया जाता था। गुरुकुलों में वृक्षारोपण–उत्सव मनाया जाता था और बड़े–बड़े वृक्ष जैसे नीम, पीपल, बेल, बरगद, आम, इमली आदि के पेड़ लगाए जाते थे। छात्र–समूह उनकी नियमित देखभाल करते थे, उन्हें किसी तरह की हानि नहीं हो इसका विशेष ख्याल रखा जाता था। विद्यार्थियों के हृदय में वृक्षों के प्रति आध्यात्मिक प्रेम जगाया जाता था। वृक्षों की सुश्रुषा से उनका आंतरिक

सौंदर्य जागृत होता था। लोगों के मन सुसंस्कृत बने रहते थे। आत्म–प्रेरणा मिलती थी। बच्चों के विकासोन्मुख मस्तिष्क पर इनके प्रेरणाओं की नींव गहरी हो जाती थी, फलस्वरूप कठिन परीक्षा की घड़ियों में भी वे सदाचार से विचलित नहीं होते थे। वृक्षों द्वारा सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रशिक्षण अनवरत मिलता रहे इसके लिए विद्यालयों में ही उनकी बहुतायत नहीं होती थी। प्रत्येक आश्रम, गाँव, देवालयों तथा सार्वजनिक स्थलों को भी वृक्षों से आच्छादित रखा जाता था। भारतवर्ष की अनेक विलक्षणताओं में यह भी एक विलक्षण तथ्यपूर्ण और वैज्ञानिक बात रही है। एक से एक दुर्लभ प्रजाति के वृक्ष यहाँ पाए जाते हैं। नीम तथा पीपल सिर्फ इसी देश में पाया जाता है।

वृक्षों की संघनता के लिए वन अत्यंत ही शोभनीय हुआ करती थी, साथ ही वृक्षों की सघनता, छात्रों के मस्तिष्क में सदाचार, संयम, सेवा सुरुचि, शुचिता एवं सुव्यवस्था के भाव भरा करती थी।

किन्तु मनुष्यों के कुकृत्यों, धन की लालसा के कारण वृक्षों की अवैध कटाई प्रारंभ कर दी गई। अब पहाड़ों पर बर्फ का जमना धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। सूर्यातप के कारण बर्फ थोड़े समय में ही पिघलकर बह जाती है। वृक्षों की संख्या घटने से वर्षा की सघनता भी कम होने लगी है और उसका दुष्प्रभाव अब सिंचाई जैसे महत्वपूर्ण कार्यों पर पड़ रहा है। सिंचाई के अतिरिक्त लोगों को पीने के लिए पानी उपलब्ध नहीं हो रहे है।

भारत में ही पीने के पानी के लिए लगभग ३३ करोड़ लोग तड़प रहे हैं। भारत के छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, तेलगांना, गुजरात, राजस्थान इत्यादि राज्यों में पीने के पानी का अभाव है। महाराष्ट्र का लातूड़ में तो सरकार को ट्रेन द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनी पड़ी है ताकि वहाँ के लोगों को पीने का पानी उपलब्ध हो सके। इससे स्पष्ट होता है कि वृक्षों का कितना महत्व है।

छात्रों के अतिरिक्त हमारे वैदिक ऋषि मुनि भी वनों के बीच अपना आश्रम बनाकर रहा करते थे एवं आध्यात्म की शिक्षा देकर छात्रों को संस्कारी बनाते थे। चरक संहिता में इस बात का उल्लेख है कि जब ऋषिजन अपना निवास स्थान ग्रामों में बनाने लगे और ग्राम अन्न गोधूम इत्यादि से निर्मित भोजन का सेवन करने लगे तो उनके शरीर अधिक स्थूल एवं मेदस्वी हो गए, उनकी शारीरिक चेष्टायें मंद पड़ गयी और वे अस्वस्थ हो गए, फलस्वरूप उन्हें अपना दैनिक जीवन निर्वाह करने में समस्यायें आने लगी। उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि हमारे अस्वस्थ एवं मंदता का कारण ग्रामवास है क्योंकि सश्रम से विरत होकर आलस्य पूर्वक जीवन का निर्वहन का सीधा संबंध ग्रामवास है। अतः उन्होंने ग्रामवास को छोड़कर सीधा हिमालय पर जाने की बात करने लगे। उन्होंने कहा कि हिमालय ही दिव्य तीर्थ हैं जहाँ दिव्य औषधियाँ उत्पन्न होती है। इस निश्चय के साथ भृगु, अंगिरा, अत्रिः वशिष्ठ, कश्यप, अगस्त्य, वामदेव, असित एवं गौतम आदि महर्षि हिमालय पर चले गए।

पर्यावरण संरक्षण हेतु समाज के लोगों के बीच जागरुकता पैदा करने के लिए वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलता है। वेदों से प्राचीन कोई वाङ्मय नहीं है। वेद के शांति पाठ में जिन पाँच तत्वों की शांति का वर्णन किया गया है वे है– पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश। इनमें से किसी के कुपित होने पर भूकंप, बाढ़ जलप्लावन, दावाग्नि एवं भयंकर तूफान की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उपासना से उपर्युक्त पाँचों तत्वों को शांत रखा जा सकता है।

वृक्ष कितने महत्वपूर्ण है इस बात को यद्यपि हम सभी जानते है फिर भी स्वार्थवश हम उसकी कटाई करते चले जा रहे हैं। परिणाम क्या हुआ संपूर्ण पर्यावरण दूषित हो गया, परिस्थितियों में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई। अगर इसी तरह हम वृक्षों की कटाई करते रहे तो आनेवाला दिन और भी भयावह हो जाएगा क्योंकि कार्बन–डाई–ऑक्साइड एवं हम जो गंदगी पैदा करते हैं उससे उत्पन्न होनेवाला विष को ग्रहण करनेवाले वृक्षों की संख्या लगातार घटती जा रही है। वृक्षों के अभाव में समस्त गंदगी अन्ततः हमारे पर्यावरण को प्रभावित करेगी एवं हमारा आयु, स्वास्थ, शरीर सब पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

वृक्ष स्वच्छ एवं ताजी वायु प्राणियों को उपलब्ध कराते रहते है, उससे शरीरों का पोषण होता है। वृक्ष फल देते हैं जिससे खाद्य समस्या का निदान होता है। प्रकृति की मधुरता, दया, एवं मातृत्व का अनुभव हमें वृक्षों ने ही कराया। कितने सुंदर रसयुक्त, स्वादिष्ट एवं शक्तिवर्द्धन फल परमात्मा ने मनुष्यों को दिया है, यह सोचकर हृदय श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है किन्तु सिर्फ श्रद्धा से काम चलनेवाला नहीं है। जहाँ वृक्षों के सैकड़ों अनुदान एवं वरदान हमें मिलते हैं, वहाँ हमारा भी तो कर्तव्य है कि उनकी संख्या में वृद्धि करें। वृक्षारोपण को एक परम पुनीत कर्त्तव्य मानकर उसे एक अभियान के रूप में चलाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथो की सूची

Sl. No.	Author	Title
1	डॉ0 राजीव कुमार	धर्मग्रंथों में पर्यावरण
2	डॉ0 मंजू सिंह	पर्यावरण प्रबन्धन
3	विजय कुमार 'सन्देष' नामदेव	पर्यावरण प्रदूषण समाज, साहित्य और संस्कृति
4	डॉ0 निधि मिश्रा	आयुर्वेद में पर्यावरण एवं समाज
5	पं0 परमानंद षर्मा 'नंद'	दैनिक जीवन में आयुर्वेद
6	डॉ0 सत्येन्द्र यादव	वृक्षरोपण
7	रेखा चौधरी	औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव
8	हर्ष कुमार	अग्निपुराण का ऐतिहासिक अध्ययन
9	गीताप्रेस	श्रीमद्भागवतगीता
10	गीताप्रेस	वेद कथांक–संपादक–राधेष्याम खेमका, 73वें वर्ष का विषेषांक।
11	दिवाकर	ऋग्वेद सूक्त विकास
12	ले0 भास्कर मिश्र	वैदिक षिक्षा पद्धति
13	1 ऋग्वेद 5.41.11	
14	अथर्ववेद 12.1.12	कालिदास के काव्यों में पर्यावरण चेतना, डॉ0 अजय कुमार